22/2/22 डा० गिरजा उरांव
9.15 एसोसिएट प्रोफेसर
विषय - मनोविज्ञान (2)
सेमेस्टर भाग I

(i) यह जीवन तथा मृत्यु की मूल प्रवृत्तियों का भण्डार है (Id is the reservoir of both the Life and death instincts) → यह एक Id पुकार की शक्ति है जो सभी क्रियाओं को पैदा करती है। मूल प्रवृत्तियाँ दो तरह की होती है जीवन तथा मृत्यु। एक के द्वारा रचनात्मक एवं दूसरे के द्वारा विध्वंसात्मक क्रिया की उत्पत्ति होती है। उसमें दोनों प्रवृत्तियां वर्तमान होती है। इसी के चलते व्यक्ति कोई क्रिया करता है और सुख की प्राप्ति करना इसके पीछे उद्देश्य होता है। इसीलिए इसे इच्छाओं की जननी भी कहते है।

(ii) इसे समय एवं वास्तविकता का ज्ञान नही होता (Id has no idea of time and reality) → यह समय एवं वास्तविकता पर बिना विचार के किए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहता है क्योंकि इसे समय एवं वास्तविकता का ज्ञान रहता ही नहीं यही कारण है कि यह अपने कार्य के परिणाम की भी चिन्ता नही रहता है।

(iii) इसमें तार्किक दोष होता है (Id suffers from Logical fallacy) → यह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में इस बात पर तनिक विचार नही करता है कि इच्छा पूरा होने लायक है अथवा नहीं। इसके पास तर्क का कोई स्थान नही है।

(iv) यह पूर्णतः अचेतन है (Id is wholly unconscious) → इसमें चेतना या ज्ञान का अभाव होता है। यह अचेतन रूप से ही अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहता है।